प्रकृति पर मानव का हस्तक्षेप

प्रकृति हमारा रक्षा कवच है। लेकिन आज मनुष्य की अनियंत्रित हस्तक्षेप से प्रकृति का नाश हो रहा है। वे बड़े पैमान पर वह निरंतर प्रकृति का शोषण कर रहा है। आज का युव वर्ग जंगलों का काट्कर सड़कें बनाकर, चट्टानों का तोड़कर और जलाशयों का दूषित कर प्रकृति का नाश हो रहा है।।

आज मनुष्य पर्यावरण संतुलन पर ध्यान नहीं देती। इसलिए आज प्रकृति का संतुलन नष्ट हो जाता है। यह मानव जीवन को खतरे में डालते हैं। आज प्रकृति बहुत अधिक चुनौतियाँ सहनी पड़ी थी।

"पर्यावरण हमारा माँ है;
आओ बचाएँ पर्यावरण ।।"

इस वाक्यों में हम समझा पर्यावरण हमारा माँ की तुल्य है। माँ हमारी जीवन की एक प्रधान स्थान बनते हैं। प्रकृति की सुंदरता आज नष्ट हो जाता है। मनुष्य की यह प्रवृतियों पर प्रकृति आज बहुत अधिक यादनाएँ सहनी पड़ी थी।

हमारा पर्यावरण हमारा संपत्ति है। यह संपत्ति की सुरक्षा हमारा कर्तव्य है। हम प्रत्येक जनता यह कर्तव्य समझकर जीवित होगा। हमारा पर्यावरण हमको सब कुछ दिया। स्वच्छ वातावरण, स्वच्छ जल आदि। यह हमारा जीवन की एक प्रधान घटक है।

"प्रकृति को निकारकर
मानव को अस्तित्व नहीं।।"

यह वाक्यों पर हम समझा पर्यावरण की सुरक्षा हमारी अस्तित्व की संबंधि है। पर्यावरण नहीं हम नहीं। हमारा जीवन प्रकृति की जीवन की संतुलन की एक स्थान बनें हैं। प्रकृति संतुलन पर ध्यान दें तो हम अपना जीवन को बचा पायेंगें।

आज का मानव युग कॉर्परेट की पीछे जाता है। वह बिना सोचा समझा उसका पास चलते हैं। इसलिये अंत में उनका अस्तित्व नष्ट होने के बाद उसका प्रश्न समझा है। आज मनुष्य विज्ञापन के ज़रिए चलता है। मानव युग उनका शिकार हो जाता है। प्रकृति की सुरक्षा पर हम व्यक्तियों अचेत नय होगा।

हम एकाएक जनताएँ हमारा पर्यावरण की सुरक्षा पर ध्यान दें तो एक स्वस्थ जनता को बनाते हो। एक सुंदर समाज का निशान है सुंदर पर्यावरण।

"काल करै सो आज कर
आज करै सो अब;
पल में परलय होगा
बहुरी करेगा कब ॥"

इस दोहा में हम समझा समय अमूल्य है। इसके दुरुपयोग किया तो हम जीवन में आस्तित्व नहीं। समय पर्यावरण संतुलन पर एक प्रधान स्थान बनते हैं। पर्यावरण संतुलन पर काल और आज नहीं। इसका समय अब है। पर्यावरण की सुरक्षा को एक प्रधान तय होने के बाद हमें एक सुंदर और स्वस्थ समाज को रूप कल्पना चाहिए। पर्यावरण को सोचा समझा को एक उचित तय पर हम एक सुंदर भाविष्य काल को देखा हुआ। लेकिन आज मनुष्य की अनियंत्रित हस्तक्षेप से प्रकृति बहुत अधिक चुनौतियाँ अनुभवित होगा। प्रकृति की रक्षा हमारा सुरक्षा का निशान है।

प्रकृति संतुलन हमारा जीवन की रक्षा पायेंगे।
हमारा जीवन को एक स्वस्थ मन को रूपकल्पन होगा।
"सामाजिक भलाई को कार्यक्रमों में भागीदार
सकते तो जीवन में विजय प्राप्त होना चाहिए।।"
इस वाक्यों से हम समझा सामाजिक भलाई के साथ कार्यक्रमों में योगदान करते तो हम जीवन में विजय प्राप्त होना चाहिए। सामाजिक भलाई पर्यावरण सुरक्षा पर एक स्थान बनेंगे। हमारी ज़िंदगी में उच्च विचार और श्रेष्ट कर्मों कर्तव्य प्रवृति होकर हमारा पर्यावरण का रक्षा पायेंगे। पर्यावरण की भलाई के लिए कार्यक्रमों में भागीदार होने के लिए हम एक स्वस्थ समाज को रूपकल्पना होयेगा। पर्यावरण हमारा माँ है। इसलिए हम विद्यार्थियों एक सुंदर स्थान बनेंगे। विद्यार्थियों सामने के लिए छोटा है। पर हम अपनी जीवन को एक निशानी के लिए पर्यावरण संतुलन पर सोचा प्रकृति का रक्षा पायेंगे। प्रकृति संतुलन पर ध्यान दे तो हम हमारा प्रकृति को आसमान की सामने कर देती है। आसमान बहुत अधिक ऊँचा है। यह के सामने हम पर्यावरण का रक्षा पायेंगे।

आज मनुष्य स्वार्थ के लिए पर्यावरण को नाश हो जाता है। हमारा प्रकृति हमारा जीवन की रक्षा कवच है। प्रकृति संसाधनों की रक्षा कर दें तो हम एक सुंदर जीवन और भविष्यत काल को बनते हैं। अनेक जीवन अनुभवों के साथ हम पर्यावरण को सुरक्षा पर तय होगा। पर्यावरण हमारा जीवन की सुरक्षा का अत्यन्दापे-क्षित घटक है। हमको प्रकृति को एक सुंदर जीवन अनुभवों के साथ हम हमारा जीवन को रक्षा पायेंगे।

हमारा जीवन में प्रकृति हमको सुंदर पानी, मिट्टी, जंगल आदि लेती है। इससे हमको प्रकृति की महत्व पर उसकी प्यार को एक सुंदर जनता हो जाता है। जीवन में कई तरह की प्रश्नों आई है। ये अपना आत्मविश्वास के सामने कर विजय प्राप्त कर। ये पर्यावरण संतुलन पर प्रश्नों आना चाहिए तक परिश्रम करके जरूर सफलता मिलेगी। जीवन की सीढ़ियों को विश्वास तक सामना कर है तो विजय करना। हमारा जीवन में सबसे अच्छे सुरक्षा विश्वास है। पर्यावरण सुरक्षा पर हम एकाएक जनताएँ इस विश्वास के लिए जाएँ।

प्रकृति हमारा माँ है। लेकिन हम मनुष्य को यह चिंता नहीं था। वह निरंतर प्रकृति का शोषण कर रहा है। वे बिना सोचा समझा प्रकृति हमारा माँ की बात है। जीवन की एकायक घटनाओं को यह प्रकृति की सुरक्षा पर सोचा। पर्यावरण की सुरक्षा पर हम नई पीढ़ी एक उचित तय होगा। जीवन की घटनाओं से यह तय बहुत अधिक तय हो जाता है। हम विद्यार्थियों यह कार्य में बहुत अधिक प्रधान चाहता है। विद्यार्थियों सामुद्र की सामना मिट्ठी की पुतली है। लेकिन उनका मन में विजय की आत्माविश्वास होती है। आत्माविश्वास के बात हम पर्यावरण को रक्षा पायेंगे। पर्यावरण की सुरक्षा जल, मिट्ठी, जंगल, आदि प्रकृति संसाधनों की सुरक्षा है। आदि प्रकृति संसाधनों जीवन की आधार है। जल अमूल्य है। अकाल में हम जल की महत्व पहचानना। प्रकृति हि संसाधनों का सुरक्षा न करें समय पर वर्षा नहीं मिलना। वर्षा प्रकृति संरक्षण की मुख्य स्थान बनती है। प्रकृति संसाधनों को नकार कर हम नहीं इस भूमि में रह न जायगा।

"पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है"। प्रकृति सुरक्षा पर हमारा कर्तव्य समझकर अगर बचा हुआ पानी, मिट्टी, जंगल आदि की संरक्षण पर ध्यान दे तो हम हमारा प्रकृति को रक्षा पायेंगे"।